उड़ीसा में प्रशिक्षित बेरोजगार शिक्षकों का आत्मदाह :

खुद को खत्म करने की जगह अमानवीय व्यवस्था को ही खत्म करना होगा !

जिस वक्त धनपतियों के 'मिलेनियम' के उन्मादोत्सव की तैयारियां अपने शबाब पर थीं, उड़ीसा प्रान्त के छह शिक्षकों ने आत्मदाह की कोशिश की, जिनमें से एक प्रसन्न कुमार मोहंती अब जीवित नहीं है। उसने कटक मेडिकल कालेज में दम तोड़ दिया।

लम्बे समय से नौकरी पाने के लिए संघर्षरत उड़ीसा के इन शिक्षकों को उस वक्त निराशा हाथ लगी जब राज्य सरकार ने प्रशिक्षित बेरोजगार शिक्षकों की भर्ती की विज्ञप्ति तो निकाली, लेकिन आवेदन के लिए 40 वर्ष की अधिकतम आयु सीमा निर्धारित कर दी थी और वे ये सीमा पार कर चुके थे। उनकी मांग महज दो वर्ष आयु में छूट की थी।

इस घटना के कुछ दिनों पूर्व ही जयपुर के एक युवा टैक्सी ड्राइवर रामचंद्र मंगतानी ने पुलिस उत्पीड़न से तंग आकर अपनी पत्नी के साथ आत्महत्या कर लिया था। वह पुलिस के अमानवीय बर्ताव के बारे में साठ पृष्ठों का ब्यौरा छोड़ गया है; जो पुलिसिया जुल्म की, जिन्दा तस्वीर है।

पुलिसिया उत्पीड़न का एक और शिकार नौजवान, 25 वर्षीय मंजीत सिंह सोढ़ी ने 10 जनवरी को लखनऊ विधान सभा के समक्ष दिन के वक्त आत्मदाह की कोशिश की। बाद में अस्पताल में उसने भी दम तोड़ दिया। इसी दिन पटना में मुख्यमंत्री आवास के सामने अपने ऊपर हुए जुल्म के प्रतिरोध और न्याय मिलने की नाउम्मीदी में गनौरा देवी ने भी आत्मदाह की कोशिश की।

सहस्त्राब्दि के शोर-शराबे की बीच आत्मदाह की ये घटनाएं हमारे वर्तमान तंत्र के क्रूर और संवेदनशून्य चेहरे का एक जीता-जागता नमूना है। कितना भयावह है यह सब कुछ। प्रशिक्षित होने के बावजूद नौकरी की नाउम्मीदी में या पुलिस की बर्बरता का शिकार होकर खुद की जिन्दगी को समाप्त कर लेने का प्रयास। यह है उदारीकरण का सच। यह है 'रोजगार विहीन विकास' का एक छोटा सा नमूना। यह है भाजपा के 'भयमुक्त समाज' की हकीकत। ये घटनाएं अपवाद नहीं हैं। यह तो, समुद्र में तैरते विशाल हिमशिलाखण्ड का ऊपर दीखने वाला महज छोटा सा हिस्सा है।

दरअसल, भूमण्डलीकरण के वर्तमान दौर में, नौकरी पाना तो महज एक सपना है। उदारीकरण-निजीकरण के वर्तमान दौर में छंटनी और तालाबन्दी की जो प्रक्रिया चल रही है उसमें नौकरीशुदा लोगों की ही नौकरी खतरे में है, तो नयी नियुक्तियां भला कैसे संभव है ? नौकरी के लिए तरह-तरह की बाधाएं खड़ी होंगी ही। 25 करोड़ बेरोजगारों की फौज में लगातार और तेज गति से वृद्धि जारी है। अब तो सरकार ने इससे साफतौर पर पल्ला झाड़ लिया है। 'या तो देश का ''विकास'' कर लो या फिर रोजगार लो !' देश की अर्थव्यवस्था कों विश्वअर्थव्यवस्था में मिलाने के लिए कुर्बानियां तो देनी ही पड़ेंगीं! और दस फीसदी धनपशुओं के वैभव के लिए यह कुर्बानी 90 फीसदी लोगों से ही तो ली जाएगी। प्रधानमंत्री के ''कठोर फैसले'' इन्हीं के सुख के लिए हैं। बाकी के लिए है लाठी-डण्डा-जेल-पुलिस-थाना और मरने की राह।

लेकिन अपनी जिन्दगी यूं ही खत्म कर देना ही समस्या का समाधान तो नहीं। आत्मदाह की आग में खुद को झोंक देने से बेहतर क्या यह न होगा कि इस आदमखोर हत्यारी व्यवस्था के ही खात्मे की तेयारी की जाए ! अगर आग लगानी ही है तो विलासिता और समृद्धि के उन टापुओं पर लगायी जाय, जो हमारे शरीर के एक-एक कतरा खून को निचोड़कर हमें मरने के लिए छोड़ दे रहे हैं।

कात्यायनी के शब्दों में :

यह समय है
या राख और अंधेरे की बरसात ?
बेहतर है
आग लगे
जंगलों की ओर
मुड़ जाना !

● रामबाबू

तुम प्यार करो ऐसे
जैसे किसी ने किसी को कभी नहीं किया
तुम घृणा करो ऐसे
जैसे किसी ने किसी पर कभी नहीं किया
हंसो तो ऐसे हंसो
कि हर तरफ खिल उठें
सत्य और सौन्दर्य के फूल
रोओ तो ऐसे रोओ
कि आंसुओं से झिलमिला उठे जाग्रत
मनुष्य का विषाद
तुम बढ़ो
सागर के ज्वार की तरह बढ़ो
और दफन कर जाओ
तमाम जुल्मो-सितम
सात समुद्र पार बियाबान में ...

● महेश्वर